– प्रकाशकीय निवेदन –

षट्खण्डागम धवला सिद्धान्त ग्रंथके चतुर्थ खण्डके पंचम व षष्ठ भागमें अर्थात् ग्यारहवें पुस्तकमें वेदनाक्षेत्र वेदनाकाल का वर्णन किया गया है ।

इस ग्रंथका पूर्व प्रकाशन श्रीमंत सेठ सिताबराय लक्ष्मीचंद्र जैन साहित्योद्धारक सिद्धान्त ग्रंथमाला, विदिशा द्वारा हुआ है । उसका मूल ताडपत्र ग्रंथसे मिलानकर संशोधित पाठसहित तृतीयावृत्ति प्रकाशन-अधिकार प्राप्त जीवराज जैन ग्रंथमाला सोलापुर द्वारा प्रकाशित करनेमें हम अपना सौभाग्य समझते हैं ।

इस ग्रंथराजके मूल संपादक स्व. पं. फूलचंद्रजी सिद्धान्तशास्त्री का वृद्धापकालके कारण स्वर्गवास होनेसे इस ग्रंथका प्रकाशन करते समय उनकी पावन स्मृतिको श्रद्धांजलि अर्पणकर हम दुःख समवेदना प्रकट करते हैं ।

स्व. ब्र. रतनचंद्रजी मुख्त्यार (सहारनपुर) तथा आदरणीय पू. आर्यिका विशुद्धमती माताजी के संपर्कमें धवला ग्रंथोंका सूक्ष्म, गहन स्वाध्याय जिनका होता रहा ऐसे श्रीमान् पं. जवाहरलालजी सिद्धान्त शास्त्री (भिंडर) तथा उनकी सुविद्य धर्मपत्नी श्रीमती कैलास जैन (भिंडर) द्वारा भेजे हुए संशोधनका भी इस संशोधनकार्यमें हमें सहयोग मिला, जिसके लिए हम इन सभी सज्जनोंके अतीव आभारी हैं । प्रस्तुत पुस्तकमें पूर्वमुद्रित पाठ और संशोधित पाठ अलगसे संलग्न किये गये हैं ।

इस ग्रंथका संशोधनकार्य जीवराज जैन ग्रंथमालाके संपादक स्व. श्री. नरेंद्रकुमार भिसीकर शास्त्री तथा श्री. धन्यकुमार जैनी द्वारा संपन्न हुआ है । तथा मुद्रणकार्य कल्याण प्रेस, सोलापुर के द्वारा संपन्न हुआ है । हम इनके भी आभार प्रदर्शित करते हैं ।

धर्मानुरागी श्रीमान् डॉ. अप्पासाहेब कलगोंडा नाडगौडा पाटील तथा उनकी सुविद्य धर्मपत्नी डॉ. सौ. त्रिशलादेवी नाडगौडा पाटील इन महानुभावोंने षट्खण्डागम धवला भा. १० से १६ तकके पुनर्मुद्रण के लिए आर्थिक सहयोग देकर जिनवाणीकी सेवाका जो महान आदर्श उपस्थित किया है उस के लिए उनका हार्दिक अभिनंदन करते हुए हम उनके प्रति अनेकशः धन्यवाद प्रकट करते हैं ।

– रतनचंद सखाराम शहा

मंत्री